International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

"शासकीय विद्यालय में अध्ययनरत किशोरों (13-17 वर्ष) के नैतिक मूल्य का अध्ययन "

(मध्यप्रदेश के खंडवा शहर के संदर्भ में)

शोधार्थी- **सुश्री अनुराधा बरुड़** - समाज विज्ञान अध्ययन शाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय. इंदौर

शोध निर्देशिका - **प्रो.डॉ.मोहिनी सकारगायें** सेवानिवृत्त सह.प्राध्यापक मखनलाल चतुर्वेदी शास.कन्या महाविद्यालय. खंडवा

सह शोध निर्देशिका - **प्रो.डॉ.सुषमा शर्मा** सह.प्राध्यापक माता जीजाबाई शास.कन्या.महाविद्यालय.इन्दौर

शोध सारांश - नैतिक मूल्य मनुष्य के व्यक्तित्व विकास में बहुत आवश्यक होते हैं | नैतिक मूल्य की पहचान हमारे व्यवहार से होती है |परिवार एक ऐसी संस्था है जो नैतिकता की शुरुआत बच्चों में करती है | व्यक्ति के व्यवहार में नैतिक मूल्य की झलक दिखाई देती है ,व्यक्ति अपनी रुचि एवं आवश्यकताओं के अनुसार नैतिक मूल्यों को ग्रहण करता है| नैतिक मूल्य हमें समाज में मान सम्मान प्रदान करते हैं | प्राचीन काल से ही गुरुकुलों में गुरुओं के द्वारा शिष्यों को संस्कार की एवं संस्कृति की शिक्षा प्रदान कि जाती थी | जिसमें नैतिक मूल्य एवं कर्तव्यों की शिक्षा दी जाती थी ,बालक को एक नागरिक बनने में यह शिक्षा महत्वपूर्ण योगदान देती थी |

"जॉन लॉक ने कहा है -"बालक का दिमाग कोरी स्लेट के समान होता है इस पर जो लिखा जाए वह कभी मिटता नहीं है|"बचपन में सीखी गई बातें हमेशा जीवन के अंत तक याद रहती हैं परिवार समाज एवं विद्यालय बालक को त्याग ,बलिदान ,ईमानदारी ,भाईचारा अपनों से प्रेम बड़ों का आदर सम्मान आदि सिखाते हैं |नैतिक मूल्य हमारे संस्कारों में शामिल होते हैं ,एवं बचपन से ही हमारे चरित्र का एक भाग बन जाते हैं जो समय के साथ-साथ हमारे व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं | नैतिक मूल्यों के बिना मनुष्य का व्यक्तित्व शुन्य हैं ,ऐसे व्यक्ति समाज का हिस्सा नहीं बन पाते और उन्हें असफलताओं का सामना करना पड़ता है |

प्रस्तुत शोध कार्य मे नैतिक मूल्यों को जानने मे मदद मिली एवं वर्तमान समय मे किशोरों को उनके नैतिक मूल्यों के निर्माण मे विद्यालय व पारिवारिक वातावरण किस प्रकार सहयोगी हो सकता है का अध्ययन किया गया | शासकीय विद्यालय मे अध्ययन करने वाले विधयार्थियों पर,उनके मूल्यों पर शिक्षक ,मित्र ,सहपाठी सभी के द्वारा बताई गई अच्छी एवं बुरी बातों का प्रभाव भी पड़ता है | मूल्य व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है | आज के आधुनिक युग मे हमारे मूल्य परिवर्तित होते जा रहे है,ओर आधुनिकीकरण की चकाचौंध ने सबसे ज्यादा किशोर युवा वर्ग को प्रभावित किया है |

शब्द कुंजी - संस्कार, नैतिक मूल्य, संस्कृति ,परंपरा, धार्मिकता,पौराणिक,आदर्श,नियम

- **प्रस्तावना** –

वैदिक काल से ही भारतीय शिक्षा में धर्म तथा जीवन मूल्यों में नैतिक मूल्य का संरक्षण किया जा रहा है समाज में व्यक्ति के संपूर्ण विकास में नैतिक मूल्य का योगदान है | धार्मिक ग्रंथो में भी नैतिक मूल्य को महत्व दिया गया है नैतिक मूल्य हमारे संस्कारों में सम्मिलित होते हैं

1. नैतिक मूल्य का अर्थ - नैतिक मूल्य नैतिक विकास से उत्पन्न होता है | व्यक्ति के रीति रिवाज , मर्यादा में रहना , परंपरा के अनुसार चलना नैतिकता कहलाता है जो नैतिकता के विपरीत चलता है उसे अनैतिक व्यवहार वाला व्यक्ति कहते हैं| हर समाज में अपने रीति रिवाज एवं परंपराएं होती है जिनके अनुसार सभी को अपना जीवन यापन करना होता है |

हारलॉक का कहना है - कि "नैतिकता संबंधी नियम धार्मिक विश्वासों ,नियमों ,न्याय, पवित्रता एवं धार्मिकता से संबंधित होते हैं "|

जॉर्ज गुरविच के अनुसार - "नैतिकता व्यक्ति की रचनात्मकता को निखारती है|" बालक दोनों चीजों नैतिकता और अनैतिकता में भेद करना सीख जाता है |

2.नैतिक मूल्य के पतन के कारण –आज के युग मे शिक्षा के साथ भौतिक वाद की दौड़ भी तेज हो गई है हर व्यक्ति को सुख सुविधाये चाहिए, जिसके कारण आज झूट,बेमानी,चापलूसी,हिंसा,जैसे अवगुणों मे फँसता जा रहा है| ओर नैतिकता समाप्त होते जा रही है |आज के समय मे नैतिक मूल्य गिरते जा रहे है संस्कारों को हस्तांतरित करने का कार्य जहा परिवार का होता था वही परिवार आज केन्द्रीय परिवार होते जा रहे है | पहले के समय मे दादा-दादी ,नाना-नानी से कहानियाँ ओर पौराणिक कथा को सुनकर बच्चे बड़े होते थे | वही दादा-दादी आज आश्रमों मे रह रहे है | नैतिकता खत्म होती जा रही है,आज के बच्चे केवल स्कूल जाने ,मोबाईल चलाने,इंटरनेट तक ही सीमित हो रहे है |ओर युवा पीढ़ी भी वाट्सअप, फेसबुक आदि मे लगे रहते है | जो समय बुजुर्गों से बात करने ओर अच्छी बाते सीखने का होता है उस समय बच्चे ओर माता पिता अपने -अपने कार्यों मे लिन होते है ,पहले के समय मे जब पत्र लिखे जाते थे तो एक भावनात्मक जुड़ाओ होता था |नई तकनीकों मे सब अपने कर्तव्यों को भूलते जा रहे है ऐसा नहीं है की आधुनिकीकरण खराब है परंतु आज की भागदौड़ मे सब नैतिक मूल्य खोते जा रहे है |

3. नैतिक मूल्य के निर्माण मे शिक्षक की भूमिका -नैतिक मूल्य के निर्माण मे शिक्षकों का महत्वपूर्ण स्थान होता है |शिक्षक एक माली की तरह होता है जो बच्चे रूपी पौधे को अपने शाला के बगीचे मे रोपित करता है जो विधार्थी को सही ओर गलत मे अंतर करना सीखते है ,किताबी ज्ञान के अतिरिक्त संस्कार ओर नैतिक शिक्षा का ज्ञान भी करते है जिससे अच्छे चरित्र निर्माण मे योगदान प्राप्त हो जिससे उसका भावनात्मक,मानसिक,सामाजिक विकास भी हो | राष्ट्र के निर्माण मे छात्रों की भूमिका शिक्षक के द्वारा दिए गए मार्गदर्शन के आधार पर बनती है|छात्र ओर शिक्षक एक सिक्के के दो पक्ष होते है इनके बिना राष्ट्र की कल्पना नहीं की जा सकती |

- **शोध कि प्रासंगिकता** –

वर्तमान परिपेक्ष में पूर्व किशोर अवस्था में होने वाले शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तनों के फलस्वरूप किशोरों के नैतिक मूल्य को समझने में सहयोग प्राप्त हुआ एवं कई कारणों ओर प्रभावित करने वाले तत्वों की जानकारी प्राप्त हुई जो किशोरावस्था मे किशोरों के नैतिक मूल्य के विकास मे योगदान प्रदान करते है |

- **शोध साहित्य का पुनरावलोकन**

1. लॉरा पार्क एवं अन्य (2017)-ने अपने शोध मे 60 अध्ययनों ओर सवाट्स के आधार पर पाँच कारक मॉडल के बीच संबंधों क मेटा विश्लेषण किया ओर निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि सुसंगत ओर सैद्धान्तिक रूप से सार्थक संबंधों को मूल्य प्रभावित करते है| उन्होंने बताया की मूल्यों मे व्यक्तिगत पैमाने के उपयोग की प्रव्रतती को नियंत्रित करना उचित है |

2.डॉक्टर मोटवानी अरुणा (2015) - ने अपने शोध अध्ययन के पश्चात निष्कर्ष दिया कि आज की तकनीकी शिक्षा के पाठ्यक्रम में किसी एक विषय को सम्मिलित किया जाता है जबकि यदि छात्रों को सभी विषयों की एकीकृत शिक्षा दी जाए तो नैतिक मूल्यों को बढ़ाया जा सकता है एवं युवा विद्यार्थी इन मूल्यों को अपने जीवन में उतार सकेंगे |

3.ठाकुर देवेंद्र सिंह (2015)- ने अपने शोध के आधार पर स्पष्ट किया कि मानव जीवन में एवं युवाओं में नैतिक मूल्य अत्यधिक आवश्यक है |आज देश में युवाओं का प्रतिशत 60% से अधिक है ,युवाओं को बताना होगा कि नैतिक मूल्य को अपनाकर सफल सामाजिक व्यवस्था को चलाना संभव है तभी हमारा देश विकास कर सकेगा | नैतिक मूल्य के अभाव में अनैतिक कार्य एवं अराजकता बढ़ेगी समाज में नैतिक मूल्यों को फिर से स्थापित कर हम सौहार्दपूर्ण तरीके से जीवन यापन कर सकते हैं ,तभी देश में खुशहाली रह सकेगी |

4.तोमर सुभान सिह (2015)-ने निष्कर्षतः कहा की वर्तमान समय मे नैतिक मूल्य का हास हो रहा है ओर उनमे बड़ों का बुजुर्गों के प्रति सवेदनशीलता,शिक्षकों के प्रति आदर सम्मान की भावना समाप्त होते जा रही है |इसलिए परिवार व शिक्षकों का भी यह दयित्व है की वे उन्हे सही-गलत ,नैतिक-अनैतिक क ज्ञान करवाए यदि बच्चा कोई गलती करता है तो उसे तुरंत रोक जाए एवं उसके परिणामों से अवगत कराया जाए ताकि वह फिर उस गलती को न दोहराए |

- **अनुसंधान के उद्देश्य -**

1. शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत 13–17 वर्ष के किशोरों के नैतिक मूल्यों का अध्ययन करना।

- **परिकल्पना**

मुख्य परिकल्पना:

1. आयु बढ़ने के साथ किशोरों के नैतिक मूल्यों में सकारात्मक वृद्धि होती है।

- **शोध विधि –**

प्रस्तुत शोध "शासकीय महाविद्यालय मे अध्ययनरत किशोरों के नैतिक मूल्य का अध्ययन" हेतु गुणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया ,शोध हेतु प्राथमिक स्त्रोत के लिए नैतिक मूल्य मापनी का प्रयोग किया गया एवं द्वितीयक स्त्रोत के संकलन हेतु पत्र, पत्रिकाये,पुस्तकों,जर्नल को शोध कार्य हेतु

सम्मिलित किया गया| प्राथमिक आँकड़ों के लिए नैतिक मूल्य मापनी का प्रयोग किया गया। द्वितीयक आँकड़ों के लिए पुस्तकें, शोध-पत्र, पत्र-पत्रिकाएँ एवं जर्नलों का उपयोग किया गया। लॉटरी विधि द्वारा 13–17 वर्ष आयु वर्ग के 100 किशोरों का चयन किया गया।

- **निदर्शन** –

देवनिर्दशन की लाटरी विधि द्वारा शासकीय विद्यालय मे अध्ययनरत 100 किशोरों को शोध कार्य हेतु चुना गया | जिसमें (13-17) वर्ष के किशोरों के नैतिक मूल्य का स्तर निम्न प्राप्त हुआ|

किशोरों के नैतिक मूल्य से संबंधी तालिका

आयु	विद्यार्थी की संख्या	अत्यधिक उच्च नैतिक मूल्य	उच्च नैतिक मूल्य	मध्यम नैतिक मूल्य	निम्न नैतिक मूल्य	अत्यधिक निम्न नैतिक मूल्य
13	20	05	11	01	02	01
14	20	09	06	02	03	Nil
15	20	11	04	04	01	Nil
16	20	06	10	03	01	Nil
17	20	15	02	01	02	Nil
योग	100	46	33	11	09	01

कुल 100 छात्रों का प्रतिशत निम्न सूत्र द्वारा प्राप्त किया गया-

सूत्र - प्रतिशत=श्रेणीमें लोगों की संख्या/कुल लोगों की संख्या*100

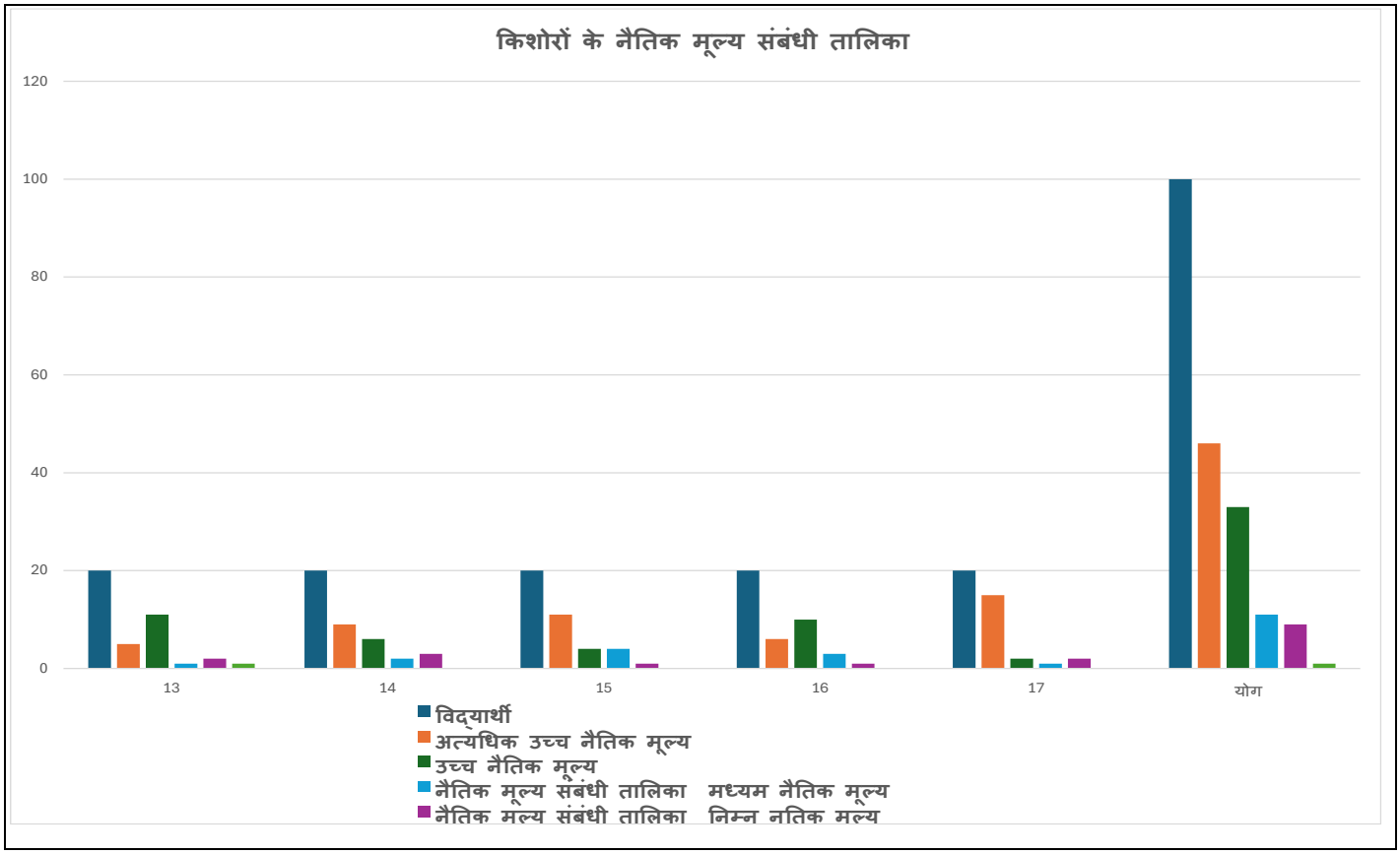

निष्कर्ष –

निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि अधिकांश किशोरों का नैतिक मूल्य स्तर उच्च पाया गया। कुल 100 विद्यार्थियों में से 46% के नैतिक मूल्य अत्यधिक उच्च, 33% के उच्च, 11% के मध्यम, 9% के निम्न तथा 1% के अत्यधिक निम्न स्तर के पाए गए। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि परिवार, विद्यालय तथा सामाजिक वातावरण किशोरों के नैतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आयु के साथ नैतिक मूल्यों में परिपक्वता एवं दृढ़ता आती है, इसलिए प्रारम्भिक अवस्था से ही नैतिक शिक्षा एवं संस्कारों पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है।

सुझाव –

प्रस्तुत शोध कार्य के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष के अनुसार यह सुझाव दिया जा सकता है कि आयु बढ़ाने के साथ-साथ किशोर - किशोरियों के नैतिक मूल्यों में दृढ़ता आते जाती है, एवं वह अपने स्वयं के नैतिक मूल स्थापित करने लगते हैं अतः विद्यालय एवं परिवार व समाज की बाल्यावस्था से ही मूल्य के स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका होती है | अतः इन सभी का समय पर सही योगदान एक बालक को किशोरावस्था में सही नैतिक मूल्य के चुनाव में मदद कर एक अच्छा नागरिक बनने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगा |जो किशोर किशोरियों को अच्छे राष्ट्र के निर्माण में सहयोगी हो सकता है |

- **संदर्भ ग्रंथ सूची -**

1. डॉक्टर ठाकुर देवेंद्र सिंह(2015)" दिव्या शोध समीक्षा", समाज में नैतिक मूल्यों के पतन के कारण तथा नैतिक मूल्यों को पुन स्थापित करने के उपाय एक अध्ययन "पेज नंबर 175 ,volum 1st ,addition 4thजनवरी से मार्च 2015
2. सुबान सिह टैगोर (2015) "नैतिक मूल्य के उत्थान मे शिक्षक की भूमिका" पेज नं 194 ,volum 1st ,addition 4thजनवरी से मार्च2015
3. राय डॉक्टर शशी(2014) "नैतिक मूल्य परिचय एवं वर्गीकरण "मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल
4. गुप्ता,एम.एल (2014) "समाज शास्त्र का परिचय" साहित्य भवन पब्लिकेशन्स ,आगरा |
5. कोठारी ,अतुल (2009) "मूल्यों की शिक्षा",शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास ,नई दिल्ली |
6. त्यागी मनोरमा(2007) "विकासात्मक मनोविज्ञान" प्रथम संस्करण आविष्कार पब्लिशर्स ,डिस्ट्रीब्यूटर पेज नंबर 134